आबरा का डाबरा

काश! जादू की छड़ी होती, हर दर्द
पर मरहम लगा, छूमंतर कर पाती,

हर कष्टों से मुक्ति दिलाती, हर दिन
खुशियों से रहता भरा, 'विशेष दिन'

रोज जीती, अधूरे पूरे, कुछ नए सपने
बुनने का सुखद अहसास रहता,
हौसलों को पंख दे, हर डाल उड़ती,
मंजिल पहुंच मुक़ाम हासिल होता।

रास्ते सरल, सफलताएं रौशन, आंगन,
बाड़ी खुशियां से हरी भरी रहती,

बस जादू की छड़ी मिल जाए, बिखरे
रिश्तों को क्षण में समेट लेती,

नजदीकियों का अर्थ, रिश्तों की दूरियां
पाटने में बेशक सफल होती,
कहानियां रंगबिरंगी, आनंददायी, उन्हें
नए स्वरूपों में ढालती रहती।

ऐसी ही है दिलेर जादुई छड़ी, उसकी
चमत्कारी दुनिया, है अद्भुत, निराली,

जहां चुटकी में 'सिमसिम' बोल से,
बिन दस्तक दिए, खुले बंद दरवाजे।

जीवन रहस्य भी नहीं मोहताज,
किसी परिचय का, अनुभव विचित्र,
चाहत बस यही है, कि जादुई छड़ी
थामें परी बन, करतबी खेल- खेले।

उनकी मासूमियत भरी हंसी संग,
सपनों का कोई शहर बस जाए,
उड़ानों की पहुंच रंगों से सजे।

बस देख खुशियां जीवंत मन भावे,
काश कैनवस से विलीन रंग,
नवीनतम बने व तस्वीरें सजे,

इन्द्र धनुष रंगों का कमाल, विराम
पटकथा में जादुई रूपरेखा से भरे,
क्या खूब.. इसकी दुनिया बेपरवाह,
दिलकश खुशियाँ बिखरती तलवार।

गीतांजलि सक्सेना जनवरी 2025